

भाकृअनुप-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसन्धान संस्थान, करनाल (हरियाणा)

प्रमुख सलाह (01-15 जनवरी, 2025) के लिए

भारत के सभी क्षेत्रों में बुवाई और अन्य शिफरिशें

फसल सीजन 2024-25

देश में गेहूँ की बीजई (जिसमें देरी से बीजाई वाला क्षेत्र भी शामिल है) अब लगभग पूरी हो चुकी है। अनुकूल मौसम स्थिति के चलते गेहूँ की वानस्पतिक वृद्धि और टिलरिंग काफी अच्छी है।

### सामान्य सुझाव

- उत्तरी भारत में हाल ही में हुई वर्षा को ध्यान में रखते हुए, अच्छी वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए यूरिया का 40 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से एक खुराक देने की सलाह दी गई।
- जिन क्षेत्रों में वर्षा नहीं हुई है, उन क्षेत्रों में खेतों की सिंचाई करने का सुझाव दिया जाता है ताकि तापमान बहुत कम होने के कारण होने वाले नुकसान से फसल को बचाया जा सके।
- लागत में कटौती और पानी बचाने करने के लिए विवेकपूर्ण तरीके से सिंचाई करना चाहिए।
- इस स्तर पर उचित खरपतवार प्रबंधन का पालन करने की आवश्यकता है।
- सिंचाई से पहले मौसम पर नजर रखें और बारिश के पूर्वानुमान की स्थिति में सिंचाई से बचें ताकि खेतों में अत्यधिक पानी की स्थिति से उत्पन्न जलजमाव से बचा जा सके।
- फसल में पीलापन होने पर नाइट्रोजन (यूरिया) का अधिक प्रयोग न करें। इसके अलावा, कोहरे या बादल की स्थिति में नाइट्रोजन के उपयोग से बचें।
- पीले रतुआ संक्रमण के लिए फसल का नियमित रूप से निरीक्षण करें और रोग के लक्षण मिलने पर निकटवर्ती संस्थान, कृषि विश्वविद्यालय अथवा कृषि विज्ञान केन्द्रों से संपर्क करें।
- संरक्षण कृषि में यूरिया का छिड़काव सिंचाई से ठीक पहले की जानी चाहिए।

## गेहूँ की फसल के लिए क्षेत्रवार बुवाई बीज दर और उर्वरक खुराक

क्षेत्र	बीजाई की दशा	बीज दर	उर्वरक की मात्रा और डालने का समय
उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र और उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र	सिंचित, समय से बीजाई	125 कि.ग्रा./हे.	120:60:40 कि. ग्रा./हे (1/3 नत्रजन और फास्फोरस और पोटेश की पूरी मात्रा बीजाई के समय और शेष नत्रजन को दो बराबर भाग में पहली और दूसरी सिंचाई पर डालना चाहिए)
मध्य क्षेत्र और प्रायद्वीपीय क्षेत्र	सिंचित, देरी से बीजाई	125 कि.ग्रा./हे.	90:60:40 कि. ग्रा./हे (1/3 नत्रजन और फास्फोरस और पोटेश की पूरी मात्रा बीजाई के समय और शेष नत्रजन को दो बराबर भाग में पहली और दूसरी सिंचाई पर डालना चाहिए)

### खरपतवार प्रबंधन

- गेहूँ में संकरी पत्तीवाले खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए, क्लोडिनाफॉप 15 डब्ल्यूपी @ 160 ग्राम प्रति एकड़ या पिनोक्साडेन 5 ईसी @ 400 मिलीलीटर प्रति एकड़ लागू करें। चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए, 2,4-डी ई 500 मिली/एकड़ या मेटसल्फ्यूरॉन 20 डब्ल्यूपी 8 ग्राम प्रति एकड़ या कारफेंट्राज़ोन 40 डीएफ 20 ग्राम/एकड़ पर छिड़काव करें।
  - यदि गेहूँ के खेत में संकरी और चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार दोनों हैं तो सल्फोसल्फ्यूरॉन 75 डब्ल्यूजी @ 13.5 ग्राम/एकड़ या सल्फोसल्फ्यूरॉन + मेटसल्फ्यूरॉन 80 डब्ल्यूजी का उपयोग 16 ग्राम/एकड़ पर 120-150 लीटर पानी में पहली सिंचाई से पहले या सिंचाई के 10-15 दिन बाद करें। वैकल्पिक रूप से, मेसोसल्फ्यूरॉन + आयोडोसल्फ्यूरॉन 3.6% डब्ल्यूडीजी @ 160 ग्राम/एकड़ गेहूँ में विविध खरपतवार वनस्पतियों के नियंत्रण के लिए भी लगाया जा सकता है।
  - बहुशाकनाशी शाकनाशी प्रतिरोधी फ्लारिस माइनर (कनकी/गुल्ली डंडा) के नियंत्रण के लिए, बुवाई के 0-3 दिन बाद 60 ग्राम/एकड़ की दर से पायरोक्सासल्फोन 85 डब्ल्यूजी का छिड़काव करें या क्लोडिनाफॉप + मेट्रीब्यूज़िन 12+42% डब्ल्यूपी के तैयार मिश्रण का छिड़काव पहली सिंचाई के बाद 10-15 दिनों के बाद 10-15 दिनों में 120-150 लीटर पानी का उपयोग करके करें। पायरोक्सासल्फोन 85 डब्ल्यूजी को 60 ग्राम/एकड़ की दर से बुवाई के 20 दिन बाद भी लगाया जा सकता है अर्थात् पहली सिंचाई से 1-2 दिन पहले, यदि इसे बुवाई के समय नहीं लगाया गया था।
- उच्च उर्वरता और जल्दी बोई गयी गेहूँ की व्यवसायिक उत्पादन के लिए 02% क्लोरमेक्वेट क्लोराइड 50% एसएल + वाणिज्यिक उत्पाद के 01% पर टेबुकोनाजोल 259% ईसी के टैंक मिक्स सम्मिश्रणों का पहला छिड़काव 160 लीटर/एकड़ पानी का उपयोग करके प्रथम नोड अवस्था (50-55 दिन) में किया जा सकता है।

## दीमक नियंत्रण

दीमक प्रवण क्षेत्रों में, क्लोरोपायरीफॉस @ 0.9 ग्राम ए.आई/किग्रा बीज (4.5 मिलीलीटर उत्पाद खुराक / किग्रा बीज) के साथ बीज उपचार उनके प्रबंधन के लिए लिया जाता है। थियामेथोक्साम 70WS (क्रूजर 70WS) @ 0.7 ग्राम एआई/किग्रा बीज (4.5 मिलीलीटर उत्पाद खुराक / किग्रा बीज) या फिप्रोनिल (रीजेंट 5FS @ 0.3 ग्राम सक्रीय तत्व/कि. ग्रा. बीज या 4.5 मिलीलीटर उत्पाद खुराक / किग्रा बीज) के साथ बीज उपचार भी बहुत प्रभावी है।

## पीला रतुआ रोग के लिए सलाह:

स्ट्राइप रस्ट विकास के लिए अनुकूल मौसम और इसके आगे फैलने को ध्यान में रखते हुए, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे स्ट्राइप रस्ट की घटना को देखने के लिए नियमित रूप से अपनी फसल का दौरा करें।

किसानों को सलाह दी जाती है कि वे पीले रतुआ रोग के लक्षणों की पुष्टि के गेहूँ लिए वैज्ञानिकों/विशेषज्ञों/विस्तार कार्यकर्ताओं को सूचित करें अथवा परामर्श करें क्योंकि कभी-कभी पत्तियों का पीला पड़ना रोग के अलावा अन्य कारकों के कारण भी हो सकता है। यदि किसान अपने गेहूँ के खेतों में पैच में पीला रतुआ देखते हैं, तो निम्नलिखित उपायों की सिफारिश की जाती है:

- संक्रमण के आगे फैलने से बचने के लिए प्रोपिकोनाज़ोले 25इसी @ 0.1% या टेबुकोनाज़ोले 50% + ट्राई फ्लोक्सीत्रोबिन 25% डब्ल्यू जी @ 0.06% का एक स्प्रे दिया जाए।
- किसानों को फसल का छिड़काव तब करना चाहिए जब मौसम साफ हो यानी बारिश न हो, कोहरा और ओस आदि न हो। किसानों को दोपहर में छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।



(रतन तिवारी)  
निदेशक